कार्बन का कोहरा

ज्ञान और विज्ञान में उत्कृष्ट प्रगति के साथ मनुष्य धरती को तबाह भी कर रहा है. पृथ्वी पर अभी कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा तीस लाख सालों में सबसे अधिक है. जिस भूवैज्ञानिक दौर में हम रह रहे हैं, उसकी उम्र भी इतनी ही है. जर्मन शोध संस्था पॉट्सडैम इंस्टीट्यूट के अध्ययन के अनुसार, इस गैस में बढ़ोतरी का मुख्य कारण जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल है, जो वैश्विक ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत है. कार्बन डाइऑक्साइड के साथ वातावरण में मिथेन की बढ़त भी बेहद चिंताजनक है. धरती के तापमान को बढ़ाने में इन गैसों की सबसे बड़ी भूमिका है. इनके कारण हमारे ग्रह के वातावरण में गर्मी संचित होती रहती है. ये गैस बाहर से प्रकाश को आने देते हैं, पर गर्मी के एक हिस्से को निकलने से रोक देते हैं. लाखों सालों में पृथ्वी के औसत पूर्व-औद्योगिक तापमान में दो डिग्री सेल्सियस से अधिक की वृद्धि नहीं हुई है, पर अब इस सीमा को लांघने की आशंका बढ़ गयी है. यदि पर्यावरण और जलवायु को लेकर हमारी मौजूदा लापरवाही में बदलाव नहीं आया, तो आगामी 50 सालों में ही बढ़ोतरी दो डिग्री सेल्सियस की रेखा से पार चली जायेगी. नासा के मुताबिक धरती के सतह के औसत तापमान के लिहाज से पिछला साल बीते 140 सालों में सबसे अधिक रहा था. ध्रुवीय ग्लेशियरों के पिघलने, समुद्री जल-स्तर के बढ़ने, वनों के निरंतर क्षरण, वन्य जीवों के अस्तित्व पर संकट, प्राकृतिक आपदाओं की बारंबारता आदि के रूप में जलवायु परिवर्तन के खतरनाक नतीजे हमारे सामने हैं. तीस लाख साल पहले शुरू हुए वर्तमान भूवैज्ञानिक दौर में मानव सभ्यता की आयु मात्र 11 हजार साल ही है. ऐसे में जो जलवायु परिवर्तन हो रहा है, वह बहुत गंभीर है. इन तथ्यों की स्पष्ट चेतावनी है कि हमें आपात स्तर पर तापमान वृद्धि को नियंत्रित करने के उपाय करने होंगे. अंतरराष्ट्रीय राजनीति के पैंतरों के कारण जलवायु से जुड़े समझौते बेअसर हैं. देशों के बीच अर्थव्यवस्था को लेकर आत्मघाती प्रतिस्पर्धा चल रही है. सर्वाधिक कार्बन उत्सर्जन करनेवाले विकसित देश उभरती अर्थव्यवस्थाओं को आवश्यक वित्तीय मदद करने में आनाकानी कर रहे हैं, जिसकी वजह से स्वच्छ ऊर्जा के विस्तार की गति बहुत धीमी है. यह संतोष की बात है कि अमेरिका और यूरोप में नये सिरे से पर्यावरण की चिंता को राजनीतिक एजेंडे में लाने के लिए प्रयास हो रहे हैं. चीन और भारत ने भी प्रदूषण रोकने और ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों पर ध्यान देना शुरू किया है, परंतु इन देशों के सामने अपनी आबादी की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आर्थिक और औद्योगिक विकास की गति को बनाये रखने की बड़ी चुनौती भी है. हमारे देश में ऊर्जा के लिए स्वच्छ स्रोतों को बढ़ावा दिया जा रहा है, पर कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि ही हो रही है. वायु और जल प्रदूषण की भयावह समस्या भी है. ऐसे में देश और दुनिया के पैमाने पर सहभागिता के साथ धरती और मानव जाति को बचाने के त्वरित प्रयास आवश्यक हैं.

विकसित देश उभरती अर्थव्यवस्थाओं को आवश्यक वित्तीय मदद करने में आनाकानी कर रहे हैं, जिसकी वजह से स्वच्छ ऊर्जा के विस्तार की गति बहुत धीमी है.

ऑनलाइन गेम की गिरफ्त में बच्चे

हम लोगों को इस बात का एहसास नहीं है कि टेक्नोलॉजी युवा पीढ़ी को कितनी तेजी से अपनी गिरफ्त में लेती जा रही है. पिछले दिनों एक बेहद चिंताजनक खबर आयी कि हैदराबाद के मलकाजगिरी में एक 16 वर्षीय लड़के को ऑनलाइन गेम पबजी (प्लेयर अननोन्स बैटलग्राउंड्स) खेलने को लेकर मां ने डांटा, तो उसने आत्महत्या कर ली. मां-बाप ने पुलिस को दिये बयान में कहा है कि बच्चे का अगले दिन अंग्रेजी का इम्तिहान था और वह पबजी खेल रहा था. इस पर मां ने उसे डांटा. इतनी-सी बात पर बच्चे ने पंखे से लट कर जान दे दी. अगर आप पबजी से नावाकिफ हों, तो बता दूं कि यह ऑनलाइन गेम है. इसमें हिस्सा लेने वाले खिलाड़ी को खुद को जीवित रखने और गेम जीतने के लिए दूसरों को मारना पड़ता है. ये गेम आपको एक ऐसी आभासी दुनिया में ले जाता है, जहां गोलियों की बौछारों के बीच आपको अपने खिलाड़ी को जिंदा रखना होता है. यह हिंसक खेल बच्चों और किशोरों को अपनी गिरफ्त में एक लत के रूप में लेता जा रहा है. इस गेम का दुष्परिणाम यह है कि इसके कारण बच्चा एक आभासी दुनिया में जीने लगता है. मैंने जब अखबारों की विभिन्न खबरों पर गौर किया, तो वे और चिंतित करने वाली हैं. पिछले दिनों खबर आयी कि महाराष्ट्र में रेल ट्रैक पर खड़े होकर फोन पर पबजी खेल रहे दो नवयुवकों की ट्रेन से कट कर मौत हो गयी थी. वे फोन पर गेम खेलने में इतने व्यस्त थे कि उन्हें ट्रेन की आवाज सुनायी नहीं दी और वे ट्रेन की चपेट में आ गये. उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद के दसवीं का एक छात्र इस खेल के चक्कर में अपना घर छोड़ कर चला गया. मुंबई के कुर्ला इलाके में एक युवक ने इसी के कारण अपनी जान दे दी थी. जालंधर में इसके लिए एक किशोर ने अपने पिता के खाते से 50 हजार रुपये निकाल लिये थे. मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में एक युवक पबजी खेलने में इतना व्यस्त था कि उसने पानी की जगह एसिड पी लिया था. गनीमत थी कि एसिड ज्यादा प्रभावी नहीं था. दुनियाभर में 40 करोड़ बच्चे और युवा इस गेम को हर दिन खेल रहे हैं. अनुमान है कि भारत में भी इनकी संख्या करोड़ों में होगी. चीन ने 13 साल तक के बच्चों के लिए इसे खेलने पर पाबंदी लगा दी है. भारत में गुजरात एकमात्र ऐसा राज्य है, जिसने इस पर पाबंदी लगाई है. गुजरात के राजकोट और अहमदाबाद में पबजी गेम खेलने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है. यहां मोबाइल पर पबजी गेम खेलने के आरोप में दस नवयुवकों को हिरासत में भी लिया गया था, जिन्हें बाद में रिहा कर दिया गया. अनेक शिक्षण संस्थानों ने भी पबजी गेम खेलने में प्रतिबंध लगा दिया है. ये घटनाएं हम सभी के लिए खतरे की घंटी है और इन पर तत्काल गौर करने की जरूरत है. दुनियाभर में पबजी पर प्रतिबंध की मांग उठ रही है. कोई गेम यदि बच्चों की जान के लिए खतरा बन जाए, तो उस पर प्रतिबंध लगाने पर विचार करना ही होगा.

दुनिया में ऐसी अनेक कंपनियां हैं केवल युवाओं के लिए गेम ही बनाती हैं. यह करोड़ों डॉलर का धंधा है. कुछेक गेम का दुष्प्रभाव यह है कि वह लत बन जाता है. बच्चे दिन रात ऑनलाइन गेम में लगे रहते हैं. उनके सोना-जागना, पढ़ना-लिखना और खान-पान सब प्रभावित हो जाता है और वे बेगाने से हो जाते हैं. इसके लिए कुछ हद तक माता-पिता भी दोषी हैं. मां-बाप को लगता है कि वे बच्चों को संभालने का सबसे आसान तरीका सीख गये हैं. दो-ढाई साल की उम्र के बच्चे को कहानी सुनाने की बजाय मोबाइल पकड़ा दिया जाता है. कुछ अरसा पुरानी खबर है कि दिल्ली के 16 साल के एक बच्चे में वीडियो गेम की लत इतनी बढ़ गयी कि उसे अस्पताल में भरती कराना पड़ा. एडिक्शन के कारण यह बालक स्कूल में फिसड्डी होता जा रहा था. खेल-कूद बंद होने और घर से बाहर न निकलने के कारण छह महीनों में उसका वजन 10 किलो बढ़ गया था और वह आक्रामक हो गया था. जब बच्चा मां पर आक्रामक हुआ, तब उसे अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा.

यह जान लीजिए कि टेक्नोलॉजी दोतरफा तलवार है. टेक्नोलॉजी की ताकत इतनी है कि उसके प्रभाव से कोई मुक्त नहीं रह सकता है. आप चाहें कि बच्चों को इसकी हवा न लगे, तो यह भूल जाइए. दिक्कत यह है कि हम सब यह चाहते हैं कि देश में आधुनिक टेक्नोलॉजी आये, लेकिन उसके साथ किस तरह तारतम्य बिठाना है, इस पर विचार नहीं करते. हमें नयी परिस्थितियों से तालमेल बिठाने के विषय में सोचना होगा. यह समस्या पूरी दुनिया की है. सभी देश इससे जूझ रहे हैं, लेकिन वे समस्या का समाधान निकाल रहे हैं. कई देशों ने इस दिशा में कदम उठाने शुरू भी कर दिये हैं कि बच्चे सीमित समय तक ही ऑनलाइन गेम खेल पाएं. जापान में तो जब बच्चे जरूरत से ज्यादा समय किसी गेम पर बिताते हैं, तो कंप्यूटर अथवा मोबाइल पर अपने आप चेतावनी सामने आ जाती है, लेकिन भारत में अब तक इस दिशा में कोई विचार नहीं हुआ है.

आशुतोष चतुर्वेदी
प्रधान संपादक, प्रभात खबर
ashutosh.chaturvedi
@prabhatkhabar.in

दिक्कत यह है कि हम सब यह चाहते हैं कि देश में आधुनिक टेक्नोलॉजी आये, लेकिन उसके साथ किस तरह तारतम्य बिठाना है, इस पर विचार नहीं करते. हमें नयी परिस्थितियों से तालमेल बिठाने के विषय में सोचना होगा.

शायद आपने गौर नहीं किया कि टेक्नोलॉजी ने आपके बच्चे में बहुत परिवर्तन कर दिया है. मोबाइल और इंटरनेट ने बच्चों का बचपन छीन लिया है. उसके सोने, पढ़ने के समय, हाव भाव और खान-पान सब बदल चुका है. हम या तो आंख मूंदे हैं या इसे स्वीकार नहीं करते है. लेकिन आपके रोकने से ये परिवर्तन रुकने वाले नहीं है. थोड़ा करीब से देखें तो पायेंगे कि आज के बच्चे बदल चुके हैं. आप सुबह पढ़ते थे, बच्चा देर रात तक जगने का आदी है. यह व्हाट्सएप की पीढ़ी है. लड़के लड़कियां दिन-रात आपस में चैट करते रहते हैं. पहले माना जाता था कि पीढ़ियां 20 साल में बदलती है, उसके बाद तकनीक ने इस परिवर्तन को 10 साल कर दिया और अब नयी व्याख्या है कि पांच साल में पीढ़ी बदल जाती है. इसका मतलब यह कि पांच साल में दो पीढ़ियों में आमूल-चूल परिवर्तन हो जाता है. अब बच्चे किशोर, नवयुवक जैसी उम्र की सीढ़ियां चढ़ने के बजाय सीधे वयस्क बन जाते हैं. शारीरिक रूप से भले ही वे वयस्क नहीं होते, लेकिन मानसिक रूप से वे वयस्क हो जाते हैं. उनकी बातचीत, आचार-व्यवहार में यह बात साफ झलकती है. टेक्नोलॉजी का एडिक्शन तो साफ नजर आता है. वे घर के किसी अंधेरे कमरे में हर वक्त मोबाइल अथवा कंप्यूटर में उलझे रहते हैं. अब खेल के मैदानों में आपको बच्चों की कम संख्या नजर आयेगी. मुझे कई अवसरों पर किशोरों से संवाद का मौका मिला है. मैंने पाया है कि बच्चों में माता-पिता को लेकर अविश्वास का भाव उत्पन्न हो रहा है जो बेहद चिंताजनक है. एक बात और मैंने नोटिस की कि माता-पिता भी बच्चे से कुछ कहने से डरते हैं कि वह कहीं कुछ न कर ले. एक गंभीर संवादहीनता की स्थिति निर्मित होती जा रही है. किसी भी समाज और देश के लिए यह बेहद चिंताजनक है.

मौजूदा चुनाव में भाषण-कला

रविभूषण
वरिष्ठ साहित्यकार
ravibhushan1408@gmail.com

मोदी और कन्हैया दोनों एक दिन में कई-कई सभाएं कर रहे हैं. दोनों भाषण-कला में बेजोड़ हैं. अरविंद केजरीवाल से बड़ी है कन्हैया की वक्तृता. वह कुछ अंशों में मोदी से भी बड़ी है, क्योंकि वे विवेक को जागृत करते हैं.

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (17 सितंबर, 1950) और कन्हैया कुमार (13 जनवरी, 1987) पर एक साथ कम शब्दों में ही सही, विचार की सचमुच क्या कोई आवश्यकता है? ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में अरस्तू ने 'दि आर्ट ऑफ रिटोरिक' पुस्तक लिखी, जिसके दस अध्यायों में अलंकार शास्त्र, वाक्पटुता, वक्तृता और वाग्मिता पर विचार किया गया है. नरेंद्र मोदी की वक्तृता से प्रभावित प्रबुद्ध जनों को एक बार यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए. गुजराती भाषी होने के बाद भी उनकी हिंदी वक्तृता का आज कोई दूसरा उदाहरण नहीं है. अपनी भाषण-कला, जिसमें आंगिक क्रियाएं भी हैं, जो अभिनय के 'अनिवार्यय पक्ष' हैं, से वे श्रोताओं में प्रभाव उत्पन्न करते हैं. अपनी भाषा-शैली और नाट्य-शैली के कारण मोदी अधिक 'पॉपुलर' हैं. वहीं जेएनयू के छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार को एक प्रमुख वक्ता के रूप में ख्याति प्राप्त है. भाषण-कला में कन्हैया भी मोदी से कम नहीं हैं. मोदी के बाद कन्हैया देश के दूसरे प्रमुख वक्ता हैं.

मोदी और कन्हैया के भाषण में अंतर है. भाषण-कला और वक्तृता में दोनों दक्ष हैं. मोदी दृढ़संकल्पी और आत्मविश्वासी हैं. मोदी का जन्मस्थान वडनगर है. वहीं कन्हैया का जन्मस्थान बेगूसराय है और शिक्षा में वे मोदी से आगे हैं. फरवरी 2019 में कन्हैया ने पीएचडी की डिग्री हासिल की. वक्तृता और भाषण-कला में आज देश में उनके जैसा युवा कोई नहीं है. उन्हें 'राष्ट्र-विरोधी' कहकर प्रचारित किया गया. जेएनयू नौ फरवरी, 2016 के बाद सुर्खियों में आया. उसके पहले 'पांचजन्य' ने जेएनयू पर केंद्रित अंक निकाला था, जिसमें जेएनयू को 'देश-विरोधी ताकतों का गढ़' कहा गया था.

कन्हैया कुमार ने पिछले तीन वर्ष में प्रधानमंत्री की नीतियों और उनकी कार्य-पद्धतियों के साथ उनके किये गये वादों की बात कही है. खुली सभाओं में उन्होंने अनेक बार मोदी की कटु आलोचना की है और लोकतंत्र में सवाल पूछने के अधिकार को प्रमुख मानते हुए उनसे कड़े सवाल पूछे हैं. नौजवान बेकार क्यों हैं? मंदिर-मस्जिद और हिंदू-मुस्लिम की बात क्यों जरूरी है? संसद के सामने संविधान की प्रति क्यों जलायी गयी? क्यों भाजपा के नेता संविधान के स्थान पर 'मनुस्मृति' लाना चाहते हैं? दस लाख करोड़ एनपीए क्यों है? एक साल में 12 हजार किसानों ने क्यों आत्महत्या की? प्रधानमंत्री को किसानों की चिंता क्यों नहीं है? क्यों उन्हें कॉरपोरेटों की चिंता है? सब कुछ मोदी की वजह से अच्छा और नेहरू की वजह से बुरा कैसे है? प्रधानमंत्री के वादे कहां गये? मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी क्यों नहीं मिलती? पब्लिक सेक्टर की कंपनियां क्यों बंद की जा रही हैं? रेलवे के कुछ स्टेशन क्यों बेचे या ठेके पर दिये जा रहे हैं? शिक्षा और स्वास्थ्य का बजट कम क्यों है? पटेल की मूर्ति बनाने का काम चीनी कंपनी को क्यों दिया गया? मुसलमानों को बाबर और लादेन की सजा क्यों दी जा रही है? मोदी के विचार कि कचरा साफ करने से आध्यात्मिक सुख मिलता है, मनुस्मृति के विचार हैं. पिछले तीन वर्ष से कन्हैया कुमार देश के प्रधानमंत्री से सवाल पर सवाल पूछ रहे हैं. ये तार्किक हैं और सोचने को प्रेरित करते हैं.

प्रधानमंत्री होने के बाद भी नरेंद्र मोदी तार्किक नहीं हैं. उन्होंने अभी तक एक भी प्रेस-कॉन्फ्रेंस नहीं की है. मोदी के यहां 'मैं' प्रमुख है. अभी आडवाणी ने अपने ब्लॉग में 'नेशन फर्स्ट, पार्टी नेक्स्ट और सेल्फ लास्ट' की बात कही है. मोदी के यहां 'नेशन' और 'पार्टी' से प्रमुख है 'सेल्फ'. उनका अर्थशास्त्र कॉरपोरेट अर्थशास्त्रियों का है. सत्रहवें लोकसभा का चुनाव मोदी के नाम पर लड़ा जा रहा है. चुनाव में एक व्यक्ति-विशेष महत्वपूर्ण है भाजपा के लिए. व्यक्ति कितना ही बड़ा हो, वह देश का पर्याय नहीं हो सकता. कन्हैया बेगूसराय से भाकपा के प्रत्याशी हैं. वे अपना मुकाबला संविधान विरोधी शक्तियों से मानते हैं. नरेंद्र मोदी कांग्रेस के विरोधी हैं. कन्हैया मोदी और आरएसएस के विरोधी हैं. कन्हैया की चिंता में लोकतंत्र और संविधान की रक्षा है. वे गरीबों, दलितों, अल्पसंख्यकों, स्त्रियों और आदिवासियों के समर्थक हैं. मोदी के यहां इनकी चिंता नहीं है. मोदी में सारी शक्तियां केंद्रित हो चुकी हैं. आज राष्ट्रवाद का 'रेटोरिक' है. मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री तक भारतीय सेना को 'मोदी की सेना' कह रहे हैं. प्रधानमंत्री द्वारा आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन पर कांग्रेस ने चुनाव आयोग में शिकायत की है. अभी तक कन्हैया ने आचार संहिता का उल्लंघन नहीं किया है.

मोदी और कन्हैया दोनों एक दिन में कई-कई सभाएं कर रहे हैं. दोनों भाषण-कला में बेजोड़ हैं. अरविंद केजरीवाल से बड़ी है कन्हैया की वक्तृता. वह कुछ अंशों में मोदी से भी बड़ी है, क्योंकि वे विवेक को जागृत करते हैं, जो मोदी के यहां नहीं है. कन्हैया निर्भीक, साहसी और हिम्मती हैं. वे नफरत के सामने मुहब्बत, तानाशाह के सामने जम्हूरियत और असमानता के सामने समानता को महत्व देते हैं. वे डरने को नहीं, लड़ने को प्रेरित करते हैं. उनकी राजनीति मूल्यों की है. दृष्टि तार्किक और वैज्ञानिक है. समझ साफ और पैनी है. कन्हैया के भारत और मोदी के भारत में अंतर है. कन्हैया शायद ही वाराणसी जाकर प्रचार करें. और मोदी? क्या मोदी बेगूसराय जाकर कन्हैया के विरोध में और भाजपा प्रत्याशी गिरिराज सिंह के समर्थन में भाषण देंगे?

आपके पत्र

कब सुधरेगी अस्पताल की हालत

धनबाद के पाटलिपुत्र मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में हमेशा संकट के बादल छाये रहते हैं. कभी वार्ड में ऑक्सीजन सिलिंडर न होने की खबर, तो कभी ब्लड-बैंक में ब्लड की कमी से मचा हो-हल्ला. कभी पानी की किल्लत, तो कभी बिजली नदारद. अब एक नयी मुसीबत धनबाद के इस अस्पताल के गले पड़ गयी है. 30 ट्यूटर एवं सीनियर रेसिडेंट्स मई महीने में सेवा-निवृत्त हो जायेंगे, तो मेडिकल छात्रों को पढ़ायेगा कौन और लोगों का इलाज करेगा कौन? इस संकट से निकलने के लिए कॉलेज प्रशासन को जल्द ही नियुक्ति प्रक्रिया शुरू करनी होगी, अन्यथा एमसीआइ अगर इंस्पेक्शन के लिए आ गयी, तो 50 सीटों पर नामांकन भी रद्द होने का खतरा बन जायेगा. झारखंड सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय को आनेवाली इस समस्या पर तुरंत ध्यान देना चाहिए और मेडिकल कॉलेज में शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया यथाशीघ्र शुरू कर देनी चाहिए.

डॉ शिवम कुमार झा, को-ऑपरेटिव कॉलोनी, धनबाद

नाम छोड़ो, काम दिखाओ !

दुनिया चाहे जैसे बदले, हमारा मुल्क बदलता है तीन चीजों से- विज्ञापन, विज्ञापन और विज्ञापन. इश्तेहारों ने सब कुछ बदल दिया है. वह चाहे जिंदगी का तौर-तरीका हो, खेल का मैदान या सियासत की चालें. यह विज्ञापनों का बाजार ही है, जिसने आइपीएल को दुनिया का सबसे बड़ा शो, तो देश को चौकीदारों का सबसे बड़ा मुल्क बना दिया. सियासी मुकाबले मुद्दों से हट कर चेहरों के इर्द-गिर्द घूमते पोस्टर-बैनरों के बीच होने लग गये हैं. इश्तेहारों के बेहिसाब खर्चों ने भारतीय चुनावों को दुनिया के सबसे खर्चीले मुकाबले की कतार में खड़ा कर दिया है. हिंदुस्तानी सियासत में नाम की चलन ने काम से इतर इंसान को नाकाम बना दिया है, लेकिन एक बात तो तय है कि राजनीति के मैदान में आये नामों को लोग काम दिखाने को कहेंगे ही.

एमके मिश्रा, रातू, रांची

पार्किंग मॉफियाओं से त्रस्त

आप बाजार में, पिक्चर देखने, किसी पार्क में जाने, प्रदर्शनी देखने, बैंक, पोस्ट ऑफिस, जीवन बीमा कार्यालय, कोर्ट-कचहरी आदि कहीं भी आवश्यक कार्य हेतु जाते हैं और वहां आस-पास खाली जगह को देख कर अपनी गाड़ी खड़ी कर देते हैं, क्योंकि वहां कहीं पार्किंग का कोई बोर्ड नहीं लगा है, न वैसी कहीं सुविधा है, परंतु जब आप अपना काम कर वापस लौटते हैं और तो एक नौजवान अपने हाथ में एक रसीद के साथ अचानक प्रकट हो जाता है और आपको थमा देता है. पूछने पर बताता है 'पार्किंग चार्ज'. चूंकि आप उस समय बिल्कुल अकेले होते हैं या अपनी पत्नी के साथ, अतः उस स्थिति में आपके पास रकम को देने के सिवाय कोई विकल्प ही नहीं होता है. यह सच है कि बिना पुलिस के सहयोग के इस तरह पार्किंग चार्ज वसूलने वाले माफियाओं का अस्तित्व नहीं हो सकता. कृपया इस गंभीर समस्या पर सभी नगर निगम, प्रशासन और पुलिस के बड़े अधिकारी समुचित ध्यान दें और आम जनता को मुक्ति दिलाएं.

निर्मल कुमार शर्मा ,गाजियाबाद

बोधि वृक्ष

चित्त की धारा

एक धनपति मरणासन्न था. जीवनभर धन तक ही उसकी दौड़ रही थी. आखिरी क्षण थे, उसने आंख खोली और अपनी पत्नी को पूछा- मेरा बड़ा लड़का कहां है? पत्नी के मन में बड़ा आह्लाद हुआ. यह पहला मौका था कि उसने किसी को पूछा था, प्रेम दर्शाया था, शायद अंतिम क्षणों में उसके हृदय में प्रेम उठा हो. पत्नी की आंखों में आंसू भर आये, उसने कहा- आप चिंतित न हों, बड़ा लड़का आपके पास बैठा हुआ है. उसने पूछा- इससे छोटा कहां है? पत्नी ने कहा- वह भी यहीं है. उसके पांच लड़के थे, उसने कहा- सबसे छोटा कहां है? पत्नी बोली- वह भी आपके पैर के पास बैठा है. सब मौजूद हैं, आप घबराएं नहीं. वह आदमी जो मरने के करीब था, उठ कर बैठ गया और कहा- अगर ये पांचों यहीं हैं, तो फिर दुकान पर कौन बैठा है? यह पूछ कर वह आदमी मर गया. पत्नी भूल में थी कि बच्चे प्रेम की वजह से याद आ रहे हैं. लेकिन, वह आदमी तो पता लगा रहा था कि इस वक्त भी कोई दुकान पर मौजूद है या नहीं? इस आदमी के बाबत हम क्या सोचेंगे? यह आदमी कितना दीन-हीन था? इसका जीवन कैसा जीवन रहा होगा? मृत्यु के क्षण में भी, न तो प्रेम था, न प्रार्थना थी, न परमात्मा था. कुछ था, तो सिर्फ पैसा था. यह स्वाभाविक है कि जिसकी जीवन की पूरी धारा पैसे से जुड़ी रही हो, अंतिम क्षण में वह प्रेम से जुड़ भी नहीं सकता है. चित्त तो एक शृंखला है, एक सतत धारा है. अगर जीवनभर वह बाहर की तरफ घूमती रही हो, तो यह असंभव है कि अंतिम क्षण में वह अंतस की तरफ घूम आये. अगर जीवनभर उसने पैसे को केंद्र बनाया हो, तो यह असंभव है कि वह कभी प्रेम को केंद्र बना ले. प्रेम आंतरिक संपत्ति है और पैसा बाह्य संपत्ति है. इसलिए आप देख कर हैरान होंगे कि जो आदमी पैसे के लिए जितना आतुर होगा, उसके जीवन में प्रेम उतना ही कम होगा. यह बिल्कुल अनिवार्य है. जिसके जीवन में जितना प्रेम होगा, पैसे पर उसकी पकड़ उतनी ही कम हो जायेगी. प्रेम और पैसे की पकड़ दोनों एक साथ-साथ कभी नहीं हो सकते हैं.

आचार्य रजनीश ओशो

कुछ अलग

गीत नहीं, विचारधारा है

आलोक पुराणिक
वरिष्ठ व्यंग्यकार
puranika@gmail.com

यह वक्त अद्भुत है. राजनीतिक विमर्श यह है कि वह गायिका उस पार्टी को ज्वॉइन कर रही हैं या इस पार्टी को.

उस पार्टी के गायक इस गायिका को समझा ले गये कि नहीं कि अभी ज्वॉइन मत करो. इधर राजनीतिक विचारधारा की तलाश हिट गीतों में होनी चाहिए. इधर एक गीत बहुत हिट हो रहा है- तेरी आंख्या का यो काजल.

इस गीत के गहन अध्ययन से जीवन सूत्र मिल जाते हैं और तमाम समस्याओं का समाधान मिल जाता है. इस गीत में कहा गया है कि झील सी गहरी आंखों में खो जाऊं. मतलब बंदा एक बार सचमुच की झील में खो जाये या आंखों की झील में खो जाये, तो फिर बाकी समस्याओं में डूबने का सीन ही नहीं बचता. डूबते बंदे को न आटे के भाव सताते न दालों की कीमत की चिंता होती. यानी इस गीत में तमाम समस्याओं का मुकम्मल हल बताया गया है कि खो जाओ और खो जाओ आंखों में. यह गीत नहीं, समग्र राजनीतिक विचारधारा है!

एक और हिट गीत है- जिसमें बताया जाता है कि- ही ही हंस देलें रिंकिया के पापा. इसका अर्थ है कि रिंकी के पापा हंस दिये. इस गीत में आगे बताया गया है कि रिंकिया के पापा से कहा गया कि वह चाय बनाएं और पिलाएं. रिंकिया के पापा ने हंसते हुए यह कार्य संपन्न भी किया. रिंकिया के पापा से कहा गया कि दफ्तर से घर लौटते वक्त सब्जी लेकर आना है, रिंकिया के पापा हंसते-हंसते यह कार्य करते हैं. रिंकिया के पापा हंसते ही रहते हैं. बंदा हंसता रहे, तो सारे बवाल खत्म हैं जी.

बॉस सेलरी कम दे रहा है और काम ज्यादा करा रहा है, तो भी फिक्र नहीं. रिंकिया के पापा हंसते ही रहेंगे. और तो और, रिंकिया के पापा पर चट देनी खींच के तमाचा पड़ता है, तब भी रिंकिया के पापा हंसते ही रहते हैं. हंसते ही जाते हैं. इस तरह बंदा हंसता रहे, तो कहीं कोई आफत ही नहीं है. रिंकिया के पापा हो जाने में ही अल्टीमेट उद्धार है.

वैसे आम आदमी चाहे या ना चाहे, रिंकिया का पापा ही हुआ पड़ा है. मोबाइल बिल में जाने क्या चार्ज लग के आते हैं- रिंकिया के पापा हंस के चुका देते हैं. क्रेडिट कार्ड वाले जाने कितने परसेंट ब्याज वसूलते हैं, रिंकिया के पापा हंस कर भुगतान करते हैं. बच्चों की फीस मैनेजमेंट बढ़ा देता है, रिंकिया के पापा चुप्पैचाप फीस भर आते हैं. रिंकिया के पापा करें तो क्या करें. एक नेता बरसों-बरस एक पार्टी में रहता है, फिर चुनावी टिकट न मिलने पर उस पार्टी को राष्ट्र-विरोधी घोषित करके दूसरी पार्टी में चला जाता है, जिसे बरसों-बरस राष्ट्रद्रोही बताता रहा. क्या करें रिंकिया के पापा!

रिंकिया के पापा हंसना सीख जायें, तो हर हाल में हंस सकते हैं. तो यह गीत गहरा राजनीतिक संदेश दे रहा है कि हंसना सीखिए. इसमें गहरा मर्म छिपा है कि तमाम नेताओं की हरकतें भी अब ऐसी हो गयी हैं कि आप उन पर हंस ही सकते हैं. रोकर भी क्या करेंगे आखिर. शिवसेना के नेता नरेंद्र मोदी को कमजोर नेता बता रहे थे, लेकिन अब मोदीजी के नेतृत्व में ही चुनाव लड़ेंगे- ही ही हंस दिहलें रिंकिया के पापा!

देश दुनिया से

गरीबी नहीं, गरीबों को खत्म कर रहा पाकिस्तान

पाकिस्तान में सरकार बनने के पांच महीने के बाद वहां महंगाई ने रिकॉर्ड बना दिया है, जिससे इमरान खान के बहुत समर्थकों को भी झटका लगा है. इमरान खान ने चुनाव से पहले गरीबी हटाने, नौकरियां बढ़ाने और पाकिस्तान को कल्याणकारी इस्लामी देश बनाने का वादा किया था. इमरान खान ने गरीबी हटाने की बड़ी बड़ी बातें कीं, लेकिन वह गरीबी को खत्म नहीं कर रहे हैं, बल्कि गरीबों को ही खत्म कर रहे हैं. लगातार बढ़ रहे घाटे और आर्थिक तंगियों से जूझ रही पाकिस्तान की सरकार के सामने भी ज्यादा विकल्प नहीं हैं. वह अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से 13वां राहत पैकेज लेने में जुटी है. पाकिस्तान के विदेशी मुद्रा भंडार में 8.5 अरब डॉलर हैं. साल की शुरुआत से तुलना करें, तो विदेशी मुद्रा भंडार को बेहतर स्थिति में कहा जायेगा. लेकिन इससे सिर्फ दो महीनों का ही आयात हो पायेगा. मांग को कम करना अर्थव्यवस्था को स्थिर बनाने का हिस्सा है, ताकि चालू खाते और व्यापारिक घाटे को कम किया जा सके. मार्च में पाकिस्तान में मुद्रास्फीति की दर 9.4 प्रतिशत से ज्यादा थी. नवंबर 2013 के बाद से ये रिकॉर्ड मुद्रास्फीति है. खाने पीने की चीजों और पेट्रोल के दाम तेजी से बढ़े हैं, जो ज्यादातर उपभोक्ताओं को प्रभावित कर रहे हैं.

कार्टून कोना

साभार : कार्टूनमूवमेंटडॉटकॉम

पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची 834001, **फैक्स करें** : 0651-2544006,
मेल करें : eletter@prabhatkhabar.in पर ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है